International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 16-06-2024, Accepted: 10-07-2024, Published: 02-08-2024
Volume 10, Issue 3, 2024, Page No. 29-30

मॉरिशस में हिन्दी कविता की उत्पत्ति और स्वरूप

सृष्टि कुशवाहा
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, मदनमोहन मालवीय पी०जी० कॉलेज, कालाकांकर, प्रतापगढ़, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
मॉरिशस में हिन्दी कविता का उदय 20वीं शब्ताब्दी के लगभग हुआ किन्तु प्रारम्भ में खण्डकाव्य लिखने का तरीका नहीं मिलता। मूल रूप से यह कहा जा सकता हो कि मॉरीशस का हिन्दी साहित्य अप्रवासी भारतीयों की पीड़ा का प्रामाणिक ग्रन्थ है। पाँच वर्षो की शर्तबंद अवधि में जो भारतीय मॉरीशस ले जाए गए उनमें से कुछ तो वापस भारत आ गए परन्तु कुछ नहीं लौट पाए। जो नहीं लौट पाए उन्होंने क्या क्या दर्द झेला इसी का चित्रण यहाँ के साहित्य में मिलता है। निस्संदेह मॉरिशस के साहित्य ने अप्रवासी भारतीयों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया है।
मॉरिशस विश्व का अन्यतम देश है। यहाँ हिन्दी के आलावा बहुत सी भाषाएं बोली जाती हैं। यहाँ कोई आधिकारिक भाषा नहीं है, किन्तु यदि विधानसभा क्षेत्रों या यातायात के क्षेत्रों की बात की जाए तो अंग्रेजी का प्रयोग इन क्षेत्रों में ज्यादा किया जाता है। जब भारत ब्रिटिश हुकूमत का गुलाम था तब कई भारतीयों को अंग्रेज मजदूरी करने के लिए मॉरिशस ले आए और भारत की आजादी के बाद भी ये मजदूर यहीं मॉरिशस में ही रहने लगे। 1834 से 1920 के बीच भारत के गिरमिटिया मजदूर मौरिशस में आए और इन्हीं मजदूरों के साथ भोजपुरी और हिन्दी का आगमन मॉरिशस में हो गया।

मूल शब्दः खण्डकाव्य, अप्रवासी भारतीय, साहित्य

''मॉरिशस में हिन्दी कविता का उद्भव हिन्दी गद्य के साथ ही हुआ। 1913 ई० में हिन्दी पत्रिका में 'होली' कविता प्रकाशित हुई थी। इसे ही मॉरिशस की प्रथम हिन्दी कविता माना जाता है। मारिशस की हिन्दी कविता उतनी समृद्ध नहीं जितनी हिन्दी कहानी फिर भी प्रवासी भारतीय साहित्यकारों द्वारा रचित हिन्दी कविताओं में मॉरिशस की हिन्दी कविता का विशिष्ट स्थान है।''[1] इन कविताओं में भारत की मिट्टी की सोंधी गंध महकती रहती है। ये कविताएं विविध भाषा–भाषी देश भारत की भाषिक सुन्दरता और मजदूरों कुम्हलाए चेहरों की हकीकत बयाँ करती सी नजर आती है। मॉरिशस में लिखी जाने वाली हिन्दी कविता पर विचार करते हुए डॉ० सुधारानी पाण्डेय कहती है–

> ''भारतेतर देशों की हिन्दी रचनाओं में मॉरिशस की हिन्दी कविताएँ अन्तरतम को धरती की सोंधी सुगंध से सुवासित करती हुई भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता की अर्थवत्ता से अनुप्राणित रही है, इसमें संदेह नहीं। ईखों सी मधुर रस वर्षा से अनुसिक्त अन्तर के लाक्षाराग को विगलित करने वाली ये कविताएँ 'खून पसीने की स्याही से गूंगा इतिहास' प्रस्तुत करती हुई ओजस्विनी वाणी में देश की समृद्धि का प्रत्याख्यान करके अपनी मातृभूमि मॉरिशस का अभिनंदन करने में पूर्ण कही जा सकती हैं।''[2]

मॉरिशस में हिन्दी की पहली कविता 'होली' 'हिन्दुस्तानी' पत्रिका जो कि डॉ० मणिलाल द्वारा स्थापित की गयी थी के 2 मार्च 1913 के अंक में प्रकाशित हुई थी। इस कविता के रचनाकार वास्तविक रूप से कौन हैं इसका पता नहीं चल पाया है, ''गणेशी'' उपनाम से लेखक ने इस कविता को प्रकाशन हेतु भेजा था–

> आर्यों ने ऐसी होली मनाई
> चहुँ दिशि से सज्जन सब जाए,
> बैठे सभा बनाई।
> गावत वेद अति नीको ध्यावत यश पगराई
> अगम मनि जाकी है भाई।।
> खेलत फाग सुलभ सुचि संयम, सत चित रही बनाई
> प्रेम रंग–रंग भरी–भरी, मारत ज्ञान गुलाल सुहाई।
> गणेशी बलि बलि जाई
> क्या आनंद देत है वाह रे होली।।''[3]

ऊपर लिखित पंक्तियों को पढ़कर इस कविता के लेखक रूप में में 'गणेशी कवि' का नाम सामने आता है, जो कि लेखक का उपनाम है इनके वास्तविक नाम का उल्लेख इस कविता में नहीं हैं इस नाम को डॉ० श्यामधर तिवारी ने 'छद्म' नाम माना है। प्रह्लाद रामशरण लिखते हैं– ''मॉरिशस की हिन्दी कविता का उद्भव गणेशी कवि की कविता 'होली' से हुआ था। यह इस देश की प्रथम प्रकाशित कविता है जिसकी भित्ति पर मॉरिशस का काव्य साहित्य पल्लवित होकर फल फूल रहा है।''[4]
मॉरिशस के साहित्य का यदि मूल्यांकन किया जाए तो गणेशी कवि के बाद ''मॉरिशस इन्डियन टाइम्स'' के 18.2.1921 से 23.6. 1921 के जो अंक प्रकाशित हुए हुए उसमें 'गणपाति दास' की आठ कविताएँ मिलती हैं। इन्होंने 'हरि ओम तत्सत', 'गौ की वंदना' शीर्षक से कविताएं लिखीं। गणपति दास की कविता का ये उदाहरण देखा जा सकता है–

> ''हाय पुकारति गाय सबै, जरा ता कहँ है नहीं बात पुछैया।
> सब ही जग को वह पालति है, निज दूध दही घृत देई मलैया।।
> अर्थ व धर्म कामादिक मोक्ष, सबै सुख को एक गाय दिवैया।
> अस गैयाहि मित्र बचावो सबै मिलि, डूबती है न तो धर्म की नैया।।''[5]

मॉरिशस में तीसरे कवि के रूप में 'हीरालाल गुप्त' का नाम लिया जाता है। प्रह्लाद रामशरण के द्वारा संपादित कृति ''मॉरिशस का आदि काव्य कानन'' में इनका सवैया संकलित है। कविता लेखन के साथ–साथ समाज सेवा में भी इनकी पर्याप्त रूचि थी। अपनी पुस्तक ''हिन्दी साहित्य का इतिहास'' में सोमदत्त बखोरी ने हीरालाल गुप्त कों एक समाज सेवी के रूप में उल्लिखित किया है।

प्रवासी भारतीय जो कि मॉरिशस में रहकर लेखन कार्य कर रहे थे उनमें 'पण्डित लक्ष्मीनारायण चतुर्वेदी' 'रसपुंज' नाम उल्लेखनीय है। 20 मार्च 1924 को इनकी पहली कविता 'होली में ठिठोली' मॉरिशस इन्डियन टाइम्स में प्रकाशित हुई। इनके दो काव्य संग्रह – रसपुंज कुण्डलिया तथा शताब्दी सरोज को उपलब्ध होते है?

'रसपुंज कुण्डलिया' में 112 पद संगृहीत है। एक सौ ग्यारहवें पद में अप्रत्यक्ष रूप से मॉरिशस का उल्लेख किया गया है। यह 46 पृष्ठों की कृति है। इसके अतिरिक्त 'शताब्दी सरोज' अप्रवासी भारतीयों के मॉरिशस आगमन के 100 वर्षों के पूर्ण होने की खुशी में लिखी गयी थी। क्योंकि यहाँ अप्रवासी भारतीयों के आगमन के 100 वर्ष पूर्ण हो जाने के पश्चात शताब्दी समारोह (1935) में मनाया गया था। जिस उपलक्ष्य में 'शताब्दी सरोज' भी रचना 'रसपुंज कुण्डलिया' ने की थी। ''इस रचना से ये पता चलता है कि रसपुंज 1935 ई० तक अपने को एक मॉरिशसीय कवि के रूप में स्थापित कर चुके थे। उन्होंने इस कृति में जिस भाषा का प्रयोग किया है उसमें भोजपुरी के अतिरिक्त क्रिओल शब्द भी आ गए हैं।''[6]

पण्डित दुर्गाचरण हरि भी मॉरिशस के साहित्य में अत्यन्त प्रसिद्ध हुए। इनके पिता बंगाल से आकार मॉरिशस में बसे थे। दुर्गाचरण हरि ने अपनी अधिकांश कविताओं के माध्यम से प्रवासी भारतीयों के जातीय उत्थान के महत्त्व दिया। एक उदाहरण इनकी कविता से द्रष्टव्य है–

''रहेंगे लेके स्वजाति मेम्बर,
समझ लेना यह हक है मेरा।
जवां हरिदत्त की आज तुमको
सन्मुख सबको सुना रही है।''[7]

इसके अतिरिक्त जनाब मुहम्मद, पण्डित रघुनंदन शर्मा, पंडित कन्हैया लाल मिश्र जैसे अनेक कवियों ने मॉरिशस में रहकर हिन्दी के व्यापक प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हिन्दी के प्रारम्भिक काल के अन्य कवियों में जिनका नाम लिया जाता है वो है 'हरिशर्मा' ये माहेबर्ग के रहने वाले थे' 'बाबू लक्ष्मण सिंह' जो कि हिन्दी और फ्रेंच दोनों भाषाओं में लेखन कर रहे थे।'' पण्डित मुक्ताराम चट्टोपाध्याय 'मॉरिशस इण्डियन टाइम्स' सम्पादक थे। ये भी अंग्रेजी के विद्वान थे। मॉरिशस का आदि काव्य कानन में इनकी एक कविता संकलित है।''[8]

मॉरिशस साहित्य में ऐसी अनेक रचनाएं संकलित हैं जिनके रचनाकारों का नाम पता नहीं चल पाया। इन कवियों की रचनाएं भी 'मारिशस का आदिकाव्य कानन' में छपी थीं। लगभग 30 ऐसी कविताएं इस संकलन में प्रकाशित हैं जिनके रचनाकारों का कुछ अता पता नहीं। ''ये अनाम कविताएं है परन्तु इनके वैशिष्ट्य को नकारा नहीं जा सकता। 'मॉरिशस का आदि काव्य कानन' में एक महिला कवि को भी स्थान मिला है जिनका नाम है 'पार्वती देवी'। इन्होंने अपनी रचनाओं में नारी उत्थान का स्वर मुखरित किया।''[9]

मॉरिशस में हिन्दी कविता का उद्भव लगभग 20वीं शताब्दी के आस पास हुआ किन्तु प्रारम्भ में खण्डकाव्य लिखने की प्रवृत्ति नहीं मिलती। फिर भी अप्रवासी भारतीयों द्वारा कविता लेखन करके काव्य परम्परा को बनाए रखने का महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। ''प्रारिम्भक काल की कविताओ में समाज सुधार की भावना प्रबल है अप्रवासी भारतीयों को अपनी समस्याओं से मुक्ति हेतु एक संदेश है इन कविताओं में। प्रारम्भिक काल की हिन्दी कविता राजसत्ता की मुखापेक्षी नहीं है। इसमें व्यवस्था तथा सत्ता की प्रशंसा नही अपितु लोक व्यथा का चित्रण है।''[10]

प्रारम्भ में लिखी गयीं मॉरिशस की हिन्दी कविताएं धर्म के प्रचार प्रसार पर केन्द्रित थीं, क्योंकि इस समय आर्य समाज के अनुयायियों तथा सनातन धर्म को मानने वाले लोगों के बीच मतभेद चलते रहते थे। यही कारण है कि खण्डन मण्डन की प्रवृत्ति इस काल में अधिक दिखाई देती है। इस काल के जितने भी कवि थे सभी ने 1926 के आम चुनावों पर सबसे ज्यादा लिखा। ये सभी बातें ये सिद्ध करती हैं कि अप्रवासी भारतीयों का साहित्य उनकी प्रखर चेतना का जीवन्त दस्तावेज है।

''प्रारम्भिक काल की हिन्दी कविताओं में भाषा का चार रूप पाया जाता है। ब्रजभाषा से प्रभावित हिन्दी, व्याकरण सम्मत खड़ी बोली, अरबी–फारसी, अंग्रेजी भोजपुरी भाषा तथा नागरी लिपि में लिखी हुई उर्दू।''[11]

संदर्भ सूची

1. सम्मेलन पत्रिका, शोध– त्रैमासिक, भाग–101 हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागराज, सम्पादक– विभूति मिश्र, पृष्ठ–94
2. डॉ० सुधारानी पाण्डेय, 'गगनांचल का मॉरिशस अंक, पृष्ठ–336
3. हिन्दुस्तानी पत्रिका, 2 मार्च 1913
4. प्रह्लाद रामशरण : मॉरिशस का आदि काव्य कानन, पृष्ठ–10
5. मॉरिशस इण्डियन टाइम्स, 18.2.1921 के अंक से
6. डॉ० मुनीश्वरलाल चिन्तामणि, मॉरिशस की हिन्दी कविता कविता पृष्ठ–10
7. डी. हरिदत्त : 'मारिशस मित्र' 16.12.1925 के अंक से।
8. सम्मेलन पत्रिका, शोध प्रमासिक, भाग का हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागराज, सम्पादक – विभूति मिश्र, पृ०–97
9. उपर्युक्त पृ०–97
10. उपर्युक्त पृ०–98
11. सम्मेलन पत्रिका, शोध प्रमासिक, भाग का हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागराज, सम्पादक – विभूति मिश्र, पृ०–98